मेरी कश्मीर यात्रा : एक कश्मीरायण

(यात्रा वर्णन)

प्रो. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर

यात्रा मेरे जीवन का अहम अनुभव है। बचपन से लेकर अब तक की जीवन यात्रा में मुझे यात्रा के प्रति अकथनीय जिज्ञासा रही है। यात्रा में मुझे अनेक विध अच्छे और बुरे अनुभव आए हैं। हिंदी के प्रसिद्ध यात्रा कार महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी ने सही कहा है–

"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां।
जिंदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहा।।"

फिलहाल जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण–तरुणीयों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। महापंडित जी कहते हैं कि, हे जवानों कमर बांध लो और संसार तुम्हें तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है, घुमक्कड़ हो जाओ, यात्रा पर निकलो।

यात्रा पर निकलने की तैयारी चल रही थी उसी दरमियान दोबारा कश्मीर यात्रा पर निकलने के लिए मन कर रहा था तभी एक मराठी गीत रेडियो पर सुनाई दिया।

"हे चिंचेचे झाड दिसे मज,
चिनार वृक्षापरी
दिसशी तू नवतरुणी काश्मिरी"

इस ब्लैक एंड व्हाइट मराठी फिल्म में अभिनेत्री उमा भेंडे, अभिनेता काशीनाथ घाणेकर और गायक महेंद्र कपूर की पहाड़ी आवाज की संगत हाल ही में सुना था। मन को आश्चर्य हुआ कि "चिनार" का पेड़ इतना सुन्दर क्यों है.....!

मैं बचपन से इस युगल गीत को रेडियो पर सुनता आ रहा हूं, लेकिन कभी इसकी व्याख्या करने की कोशिश नहीं की। जब मैं और मेरा परिवार कश्मीर गए तो कश्मीर की खूबसूरती और चिनार के पेड़ देखकर मेरा मन समझ गया कि "चिनार" का पेड़ और कश्मीर की खूबसूरती को।

चिकुर्डे-सांगली के "विशाल - सागर टूर्स एंड ट्रैवेल्स" कंपनी ने कश्मीर के मेरे सपने को साकार किया। कंपनी के प्रबंधक भी अपने पूरे परिवार के साथ हमारे साथ आए थे। चूंकि टूर में ज्यादातर लोग शिक्षक थे, इसलिए कब वे आपस में उलझ गए, उन्हें पता ही नहीं चला। फ्लाइट के टिकट बुक होने के बाद से तैयारियां जोर-शोर से शुरू हो गई। कश्मीर जाने से पहले मेरे मन में कई सवाल थे। उदाहरण के लिए: हमारे पूर्वज ऋषि कश्यप ने कश्मीर का निर्माण कैसे किया होगा? हवाई यात्रा का मेरा पहला अनुभव.....वास्तव में स्वर्ग या जन्नत क्या है? कश्मीर से धारा 370 और 35ए हटाने के बाद कैसा होगा कश्मीर? क्या कश्मीर सचमुच वैसा ही है जैसा कई फिल्मों में दिखता है? ऐसे कई प्रश्न मेरे मन में थे।

आरंभ में हमने अपने गांव से निजी स्लीपर कोच बस से कोल्हापुर किनी वाटर- मुंबई तक की यात्रा की। सुबह-सुबह हमारी कार मुंबई एयरपोर्ट के पास पहुंची लेकिन एयरपोर्ट हम समय से पहले पहुंच चुके थे। इसी कारण हमें प्रवेश द्वार पर ही सुबह आठ बजे तक इंतजार करना पड़ा। आपको आपकी यात्रा से पहले दो या तीन घंटे से अंदर जाने के लिए नहीं दिया जाता।हवाई जहाज के उड़ान से पहले आपको दो घंटे से पहले ही अंदरजाने की इजाजत है। उसी दरमियान हमने देखा कि अनेक यात्रियों को ले जाकर आने जाने वाली अनेक कार गाड़ियां, बस गाड़ियां आती और जाती रही। सही समय के बाद हमने अपनी बैगों कीडिजिटल मेटल डिटेक्टर द्वाराजांच करवाई। एक व्यक्ति के लिएट्रैवल बैग 15 किलोग्राम और छोटा पर्स या शबनम 05-07 किलोग्राम सामान तक ले जाने की इजाजत है। उससे अधिक 05 किलो तक सामान के लिए 3000 अधिक भरने पड़ते हैं। सही समय पर हमें अंदर जाने दिया।

मुंबई के भव्य दिव्य हवाई अड्डे को देखकर मेरा दिल भर आया। इंडिगो" कंपनी का विमान हमें ले जाने के लिए तैयार था। प्रमुख द्वारा से हवाई अड्डे के दफ्तर और वहां से हमें हवाई जहाज तक वातानुकूलित बस से छोड़ा गया। दरवाजे पर फ्लाइट अटेंडेंट, पायलट और एयर होस्टेस ने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया। विमान में चढ़ने के बाद मैंने सबसे पहले कॉकपिट में देखा। बैठने की व्यवस्था सिनेमा थिएटर के सीट नंबर की तरह थी। प्रारंभ में, हवाई सुंदरी ने हवाई जहाज उड़ान संबंधी कुछ सूचना और जानकारी दी। अपनी राष्ट्रीय भाषा में कम

लेकिन सटीक शब्दों में निर्देश दिए। विमान ने रनवे छोड़ दिया। हमने तुरंत अपनी सीट बेल्ट कस ली, विमान आसमान में उड़ गया। मन रोमांचित हो गया। जैसे ही विमान ऊपर चढ़ा, मुंबई शहर की विशाल इमारतें बक्से जैसी दिखने लगीं। हवाई यात्रा के दौरान मैंने कुछ चीजों पर ध्यान दिया। हवाई सुन्दरियाँ न केवल सुन्दर होती हैं, बल्कि वे अपनी जिम्मेदारियां वह बखूबी से निभाती है। एक बात को बारीकियां से देखा कि हवाई जहाज़ पर पानी के अलावा कुछ भी मुफ़्त नहीं है। हवाई अड्डे पर 100 में एक कप कॉफी या चाय 100 में पीने के पानी की बोतल,साफ सुथरापन और आपकी यात्रा की सारी सुविधाएं भी वहां आपको मिलती है। हमारे हिसाब से काफी महंगी चीज थी लेकिन हमारे आस पड़ोस में बैठे अमीर लोग अधिक पैसों को नहीं देखते, वह खरीदते थे। कोल्ड ड्रिंक 500 में बर्गर पिज़्ज़ा 750 से लेकर 1000 रुपए तक हवाई जहाज में बेचा जा रहा था। इन्हीं दरों पर काम अधिक मात्रा में हवाई अड्डे पर भी सुविधा मिलती है।

कोहरे के बीच तीन घंटे की यात्रा के बाद विमान की बंद खिड़की से बाहर देखने पर बर्फ से ढके पहाड़ों की चोटियाँ दिखाई देने लगीं। हवाई जहाज की खिड़की से बाहर झांकने के बाद मन उल्हासित हुआ। सामने शुभ्र दिखने वाला आकाश और दिल की बढ़ती धड़कन एक अलग प्रकार का आनंद दे रही थी। तभी विमान की गति कम हो गई। यहाँ तक कि जब हम मेला यात्रा में लगे झूले- पालने से नीचे आते हैं ठीक वैसी स्थिति होती है... मुझे अपने पेट में एक डर का गोला महसूस हुआ। हम सुरक्षित श्रीनगर हवाई अड्डे पर पहुँच गए। हमने देखा की जगह-जगह मिलिट्री के सैनिक,गार्ड, पुलिस मौजूद थे। सुरक्षा बहुत कड़ी थी। सबसे पहले मैं शो केस में रखे बड़े लकड़ी के हंटर की ओर आकर्षित हुआ।श्रीनगर हवाई अड्डावहां की प्राकृतिक सुंदरतारंगी बिरंगे गुलाब के फूलों ने मन मस्तिष्क को प्रसन्न कर दिया। एयरपोर्ट से निकलने से पहले हमने मोबाइल फोन में कश्मीर का एक अस्थायी सिम कार्ड लगाया। ट्रैवल कंपनी द्वारा बुलाई गई 20 सीटर वाली मिनी लग्जरी बस और ड्राइवर इमरान हमारे स्वागत के लिए उपस्थित था । हवाई अड्डे से हम होटल के लिए निकल पड़े।

रास्ते में हमने प्रसिद्ध झील "दल सरोवर" का चक्कर लगाया और निजी वाहन से लॉज में रुकने से पहले "निशात बाग" देखने गए। बर्फ से ढकी पीर पंजाल

श्रृंखला के नीचे एक विस्तृत झील "डल झील" है। निशात बाग पूर्व में डल झील के किनारे स्थित है। निशात का अंग्रेजी अर्थ 'हैप्पी गार्डन' है। सम्राट जहाँगीर और बेगम नूरजहाँ ने इस उद्यान का दौरा किया था। निशात बाग चिनार और सरू के पेड़ों की कतारों से घिरा हुआ था। अनेक रंग, (फूलों पर बैठी तितलियाँ भी पहचानी नहीं जा सकीं।) विभिन्न आकृतियों के फूल बगीचे की शोभा बढ़ा रहे थे। छोटे-छोटे झरने और ठंडे पानी के फव्वारे मन को आकर्षित कर रहे थे। बगीचे से बर्फ से ढकी चोटियाँ आसमान में सफेद बादलों की तरह लग रही थीं। निशात बाग कश्मीर का सबसे बड़ा मुगल उद्यान है। बगीचे में वनश्री को देख कर मन मोहित हो गया।

श्रीनगर में हम रात के लिए "लोन पैलेस लॉज" में रुके। जब हम वहां पहुंचे तो हमारा बहुत अच्छा आतिथ्य सत्कार किया गया। लॉज पूरी तरह से लकड़ी से बना है। कश्मीर के बंगले वास्तव में वास्तुकला के अद्वितीय उदाहरण हैं। बिल्कुल तस्वीरों की तरह दिखते हैं बंगले...! कमरे में फर्श पर पूरी तरह से कालीन बिछा हुआ था। ओढ़ने के लिए गद्दे जैसी मोटी रजाई दी गई थी। लकड़ी का नक्काशीदार दीवान कश्मीरी शिल्प कौशल का आभास करा रहा था। कश्मीर के हर हस्तशिल्प उत्पाद में चिनार के पेड़ का एक पत्ता होता है। बाथरूम में 24 घंटे गर्म पानी था, रात

में हमने पनीर मसाला और मिक्स वेज खाया। तीन मंजिला लॉज की सबसे ऊपरी मंजिल पर मालिक स्वयं श्रीमान थे। इरशाद भाई रहते थे. बड़े दिल वाला आदमी! अपार धन लेकिन वाणी में संयमित। कश्मीर के सभी घरों में बड़ी-बड़ी रंगीन कांच की खिड़कियाँ होती है और खिड़कियों को ढकने के लिए त्रिकोणीय टोपियों का उपयोग किया जाता था। ये रंग-बिरंगी खिड़कियाँ वास्तुकला की सुंदरता में चार चांद लगा देती हैं। सड़क पर आवाजाही बहुत कम थी। हालाँकि, आंतरिक सड़कें बहुत संकरी थीं और हमें कोंकण की सड़कों की याद दिलाती थीं। प्रत्येक घर की परिसर की दीवारें ऊँची हैं। हर घर में एक बड़ा लोहे का गेट होता है। साथ ही वहां सभी का अपना घर भी है। किराये के मकान में कोई नहीं रहता। हर घर के बाहर का बगीचा और बगीचों में गुलाबों से लदे पेड़ कश्मीरी खूबसूरती का नजारा पेश कर रहे थे।पहला दिन हवाई जहाज यात्रा और श्रीनगर की बहुत ही सुन्दर मुगल गार्डन के कारण यादगार रहा।

श्रीनगर की सुबह बहुत सुहावनी थी। नाश्ता ख़त्म करके हम ट्रेवलर गाड़ी में बैठ गये। दिलचस्प बात यह है कि मालिक ने हमें सात दिनों तक घूमने - फिरने के लिए एक बिल्कुल नई टेम्पो ट्रैवलर गाड़ी दी थी। कार के ड्राइवर श्री समीर भाई भी साथ थे। कश्मीर के अधिकांश पुरुष मुझे एक जैसे ही दिखते थे। कश्मीरी युवा गोरे रंग, लंबे, लाल गाल, काले बाल, दो भौंहों से बढ़ती हुई तीखी नाक, गालों पर भरी दाढ़ी और अपने धर्म को पहली प्राथमिकता देने वाले लोग होते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि कश्मीरी महिलाएं भी बेहद खूबसूरत होती हैं।उद्योग व्यवसाय व्यापार में और रास्ते पर कश्मीरी पुरुष ही दिखाई देते हैं महिलाएं घर से बाहर तक कहीं कहीं ही दिखाई देती है।

खास बात यह है कि आज तक (अपवादों को छोड़कर) किसी भी कश्मीरी एक्ट्रेस ने बॉलीवुड में कदम नहीं रखा है। कश्मीरी लोग पश्तून या डोगरी भाषा बोल रहे थे। ड्राइवर समीर भाई से हमें नई-नई जानकारी मिल रही थी। वह मधुमेह से पीड़ित थ, क्योंकि वह दिन भर मेंवल कश्मीरी मूली और खीरा ही खाता था।

गुलमर्ग, श्रीनगर से 80 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। गंडोला रोपवे और साइड सीन देखने को मिले। यहां एक अनोखी चीज खोपरा (कोकोनट पेढा) खाने की मिठाई बेहतरीन लगी। यात्रा के पहले दिन की योजनाबद्ध

यात्रा ‘गुलमर्ग’ की यात्रा गुलमर्ग समुद्र तल से 14 हजार फीट की ऊंचाई पर पूरी तरह से बर्फ से ढकी हुई जगह है। किंवदंती है कि गुलमर्ग की बर्फ से ढकी चोटी का नाम "गोंडोला या गंडोला" यह नाम एक ब्रिटिश अधिकारी की प्यारी बेटी के नाम पर पड़ा। जहाँ हमने अपनी गाड़ी पार्क की; वहां एक शिव मंदिर था। चारों ओर अध भरे बर्फ से भरी पर्वत शृंखलाएँ थीं। मंदिर के चारों ओर हरियाली थी। हमें बताया गया कि इसी जगह पर 'जय जय शिवशंकर, काटा लागे या कंकर' गाना सुपरस्टार राजेश खन्ना और मुमताज पर फिल्माया गया था।

‘गंडोला’ के शीर्ष पर जाने के लिए 2500 रुपये का टिकट देकर रोप वे का सहारा लेना पड़ता है। उसके लिए बहुत बड़ी कतारें थीं फिर हम रोपवे पर चढ़े और फेज वन पर पहुँचे। लेकिन बर्फ नहीं थी। फेज दो पर वापस जाने के लिए रोप वे का इस्तेमाल किया और गंडोला पहुँचे, रास्ते में कुछ बर्फ के साहसिक खेल भी देखे।” गंडोला में जहाँ तक नज़र जा रही थी, बर्फ ही बर्फ थी। मुझे लगा था कि पाकिस्तान की सीमा नजदीक होगी, लेकिन ऐसा नहीं था। बचपन में जिस स्नोबॉल को इतनी जोर से खींचना पड़ता था; लेकिन अब हमारे पैर बर्फ और कीचड़ में ही थे। हम अधाशा की तरह बर्फ में खेले। हाथ पैर बहुत ठंड के मारे हिल रहे थे। मैंने जर्किन्स या गम बूट नहीं पहने थे। ऐसे बदलते और अप्रत्याशित वातावरण में इंद्रधनुष दिखाई दिया (दूध में घी शक्कर जैसा) मैंने अपने जीवन में पहली बार बर्फीले क्षेत्र से इंद्रधनुष देखा। इंद्रधनुष के इस नज़ारे को तो बसमैं देखता ही रह गया । हम सचमुच भाग्यशाली थे। बर्फ पर बिताया हर पल एक सपने जैसा लगता था। एक स्थानीय हिंदी टीवी चैनल के प्रतिनिधियों ने हमारे समूह के साथ एक साक्षात्कार आयोजित किया और उस साक्षात्कार को 05 जून यानी 'पर्यावरण दिवस' पर प्रसारित भी किया। कश्मीर ‘कश्मीरायण’ के पहले ही दिन हमें यह महसूस हुआ कि हमारी यात्रा का पूरा पैसा वसूल हुआ ।

सोनमर्ग, श्रीनगर से 95 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। सिंधु, सतलज और लीडर इन तीन नदियों के साथ साइड सीन देखने को मिले। यहां भी एक्सप्रेसवे बनाने की प्रक्रिया तेज गति से शुरू है। 09 किलोमीटर लंबा बर्फीली पहाड़ों के भीतर से, अत्यंत खतरेला, पहाड़ की ऊंचाई पर सुरंग/ "टनेल" से बनाया जा रहा है। इससे आने वाले कुछ दिनों के बाद यात्रियों का करीब 01 घंटे तक का समय बचने वाला है। "सोनमर्ग" की प्राकृतिक सुंदरता देखने के लिए निकल पड़े। रास्ते में हम एक जगह फल खरीदने के लिए रुके। वहां हमने सेब, केले, लीची, स्ट्रॉबेरी, चेरी बेरी, बड़े अंगूर, कश्मीरी आम और अन्य अनाम फल खरीदे। यहां देखा गया कि, फल खरीदते समय हमारी तरह मोलभाव नहीं किया जाता। इसी दरमियान हमने देखा कि जगह-जगह पर लोकसभा चुनाव का माहौल गरमाया है। प्रचार का आखिरी दिन होने के कारण प्रचार अपने चरम पर पहुंच रहा था है। तभी उमर अब्दुल्ला की विशाल रैली हमारे सामने से गुजरी। रास्ते में चलते समय हमने सिन्धु, सतलुज, लीडर आदि नदियाँ ग्रीष्म ऋतु में लबालब बहती देखीं। मुझे इन नदियों से बहुत ईर्ष्या हुई थी। नदी का पानी गर्जना कर रहा था और तेजी से आगे

बढ़ रहा था, पानी सफेद चमक की तरह चमक रहा था। जानवरों को नहलाना, कपड़े धोना, शरीर को साबुन से नहलाना आदि कोई नहीं था है। सड़क के किनारे न हीं पान तंबाकू-मावा की टपरिया थीं और न चाय की छोटी-छोटी दुकान थी। अधिकतर होटल ही थे। शहर में कहीं भी देशी शराब की दुकान या राशन की दुकान नहीं दिखी।

कश्मीर में भी जगह-जगह विशाल सड़क निर्माण कार्य अग्रसर होता नजर आ रहा था। केंद्रीय मंत्री जो कि महाराष्ट्र के हैं मान्यवर नितिन गडकरी साहब (रोडकारी) की याद यहां भी आ गई। कश्मीर में भी हर जगह सड़क पुल का निर्माण बड़ी शालीनता के साथ मजबूती से चल रहे थे। रास्ते में हमें एक सुरंग भी मिली। यात्रा के दौरान सड़क के एक तरफ विकराल, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ थे तो दूसरी तरफ घाटी में गहरी बहती नदियाँ मनमोहक लग रही थीं, माहौल पल-पल बदल रहा था। तेज और बर्फीली पहाड़ से निकलती ठंडी चुभने वाली हवा,पल में ही सूर्यदेव का दर्शन,धूल मिट्टीभरी तूफान, तो पल में ही बारिश का आना यात्रियों के लिए एक अद्भुत और अनाकलनीय, सुंदर और मनमोहक नजारा दिखता था। आधे घंटे के बाद फिर पूर्ववत सब कुछ एकदम फ्रेश हुआ। हमारे गाड़ी के ड्राइवर ने इस कश्मीरी प्राकृतिक सौंदर्य और वातावरण को लेकर एक मजेदार टिप्पणी की उन्होंने कहा, "बॉलीवुड का फैशन और कश्मीर का माहौल पर कोई भरोसा नहीं कभी भी बदल सकते हैं।" सोनमर्ग घाटी की प्राकृतिक सुंदरता बेहद खूबसूरत है। बर्फीले हरे भरे पहाड़, बीच में विशाल मैदान और चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ पहाड़ ही पहाड़ थे। हमें बताया गया कि इसी स्थान पर हिंदी फिल्म "बजरंगी भाईजान" शूटिंग हुई थी। पहाड़ के भीतर तक पहुंचाने के लिए हमें वहां घोड़े की सवारी करनी पड़ती है, लेकिन घोड़े की लिद की दुर्गंध असहनीय होती थी।

इस स्थान पर एक छोटी टेकड़ी पर एक मूर्ति ने मेरा ध्यान खींचा जो एक सैनिक की मूर्ति थी। जो अपने घायल साथी सैनिक को ले जा रही थी, उसे देखकर मैं भावुक हो गया। हमें बताया गया कि कुछ पाकिस्तानी गद्दारों ने इस मूर्ति को नष्ट करने की कोशिश की थी। इस कश्मीर की सुंदरता को देखते हुए हम अपने सैनिकों के बलिदान को नहीं भूले, सड़क मरम्मत के कारण से हम सोनमर्ग में "जीरो पॉइंट" तक नहीं जा सके। वहां जाने के लिए कोई अच्छी सड़क नहीं थी। बाद में पता चला कि वहां अखरोट के बगीचे हैं। इस स्थान पर पर हमने बहुत सारे अखरोट खरीदे। अखरोट को देखने के बाद मुझे लगा कि इसकी मानव मस्तिष्क- भेजा जैसी प्रतिकृति है। सोनमर्ग से श्रीनगर लौटते समय रास्ते में हमने हस्तशिल्प का सामान खरीदा। कश्मीर में जैकेट, टोपी, मफलर, खिलौने और शॉल बहुत सस्ते हैं।

यात्रा का हर दिन हंसी मजाक से चल रही थी। चौथा दिन पहलगाम जाना तय हुआ था, श्रीनगर से 90 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। जगह-जगह कश्मीरी सफरचंद के बगीचे, अखरोट के पेड़ घाटी, कश्मीरी बकरियां,घोड़े,नदी झरने और यहां का प्राकृतिक सुंदर नजारा देखते-देखते हम

पहलगाम पहुंचे। यहां हमारा दो दिनों का प्रोग्राम रहा। सिंधु, सतलज के साथ मुख्य रूप में लीद्दर/लीडर इन तीन नदियों के साथ साइड सीन जगह-जगह देखने का अनुभव किया। यहां भी एक्सप्रेस वे बना है पिछली बार जब हम 08 साल पहले गए थे तब करीब 09 घंटे लगे थे। अब 04 घंटे का सफर करते ही पहलगाम पहुंच गए। पहलगाम न केवल भारत का स्वर्ग है, बल्कि पृथ्वी का भी स्वर्ग है। श्रीनगर से पहलगाम तक 90 किमी लंबी सड़क है। श्रीनगर के रास्ते में, हमने कश्मीर के शासकों और राजवंशीय उत्तराधिकारियों, श्री उमर अब्दुल्ला, मुफ्ती मोहम्मद सईद के अत्यधिक संरक्षित बंगले देखे। हम राजभवन के पास पहुंचे लेकिन भारी यातायात के कारण हम महत्वपूर्ण स्थान "लाल चौक" नहीं जा सके।

रास्ते में भारतीय सेना के बड़े-बड़े कैंप देखने मिले। यहां हमारे भारतीय जवानों द्वारा खड़े होकर भारत माता की रक्षा करने का दृश्य भी जगह-जगह देखने को मिला। यहां हम एंबुलेंस के सायरन की आवाज लगातार सुनते हैं, जैसा कि कश्मीर-श्रीनगर में भी है, लेकिन ये सायरन सैनिकों की कारों के होते हैं। हमें सड़क के दोनों ओर सेब के बगीचे देखने को मिले। सेब के बगीचे में अभी भी छोटे-छोटे हरे सेब लगे हुए थे। हम पंपोर गाँव के पास रुके जहाँ एक विशाल पठार पर केसर का खेत था और दोनों तरफ केसर और सूखे फलों के शोरूम थे। सड़क के किनारे. वहां हमें कश्मीरी चाय यानी "कावा" आयुर्वेदिक चाय पीने मिली। हमें तमाम महंगे सूखे मेवों के नमूने चखने को मिले और साथ ही असली केसर का स्वाद चखने का तरीका भी सीखने को मिला। हममें से कुछ लोग ड्राईफुट खरीदने के बजाय वहां सैंपल लेने गए। वहां हमने केसर खरीदे। मैं भी केसर के खेतों में घूमा लेकिन मौसम की कमी के कारण मुझे केसर का एक भी फूल देखने को नहीं मिला। इसके बाद आगे जाने पर हमें सड़क के दोनों तरफ लकड़ी से बल्ले बनाने वाली फैक्ट्रियां दिखीं और वह दुकान भी देखने को मिली जहां से सचिन तेंदुलकर ने बल्ला खरीदा था। बारामूला, उरी पठानकोट के गांव सड़क के किनारे थे लेकिन आप इन गांवों को सिर्फ वहां हुए बम धमाकों की वजह से जानते हैं। चूँकि कश्मीरी लोगों का स्वास्थ्य अच्छा है, इसलिए वहाँ अधिक अस्पताल नहीं हैं, रास्ते में हमें एक सुंदर गुरुद्वारा दिखाई दिया, जहाँ से पहाड़ों का पानी सुंदर लग रहा था। झरने का पानी बहुत साफ़, ठंडा और चिकना था। इसलिए बिसलेरी पानी पीने की कोई जरूरत नहीं थी।

हमने सेब के बगीचे में बने होटल में दोपहर का भोजन किया। आसपास की प्रकृति को देखना मतलब एक फिल्म देखने जैसा था। पहाड़ियों पर हरियाली और ऊंचे-ऊंचे पेड़ आसमान को छू रहे थे। लीडर नदी घाटी से होकर बहती थी। पहलगाम जाने के बाद हमें एक अलग ही दुनिया में प्रवेश करने का आनंद मिला। पहलगाम पहुँचकर हमने नदी के किनारे बड़े अक्षरों में "आई लव पहलगाम" लिखा एक बोर्ड देखा, जहाँ सभी लोग तस्वीरें लेते नज़र आ रहे थे। मुझे ऐसा लगा जैसे पर्यटकों को 'फोटोफोबिया' हो गया हो। ऊपर (बाएं से दाएं) उर्दू में लिखा था, "अगर धरती पर स्वर्ग है तो उसकी पहचान भी तुरंत हो गई। बर्फ से ढकी चोटियां भी यहीं थीं।" कई बार सूरज के तेज किरन के कारण पिघलती हुई बर्फ को भी देखने का अनुभव है। हरी-भरी हरियाली, सुंदर फूल, ऊँचे वृक्ष आदि स्वर्गीय आनंद दे रहे थे। हमारा प्रवास पहलगाम के एक ऊंचे स्थान पर "शबाना पैलेस लॉज" में था। यह महल प्रकृति की गोद और पहाड़ पर स्थित था। रास्ते में हमने भोलेनाथ शिवजी का प्राचीन मंदिर देखा, जहाँ हमने सिर झुकाया और लॉज में आराम किया। पहलगाम जैसी शांतिपूर्ण जगह मुझे पहले कभी महसूस नहीं हुई। यदि आप चौथे दिन उठते हैं और खिड़की से बाहर देखते हैं; ऊंचे-ऊंचे बर्फीले पहाड़ों, सिस्तापर्णी, देवधर, देवदार के पेड़ों के बीच से झांकते सूर्योदय को देखा। वहां सूर्योदय आमतौर पर शाम 5:30 बजे होता है। सुबह के सन्नाटे में अनायास ही मस्जिदों से निकलने वाली अजान से अरबी भाषा के स्वर हमारे कानों पर पड़े तब माहौल बड़ा मनमोहन था।

हम पहलगाम पहुंचते ही प्राइवेट कार कार गाड़ियों से निकले- लोकल साइट सीन देखने के लिए। करीब 25 -30 किलोमीटर के भीतर प्रति व्यक्ति 300 से 500 खर्च आता है। 1. आरुव्हॅली 2. चंदनवाड़ी 3. बेताब व्हॅली इन तीन स्थानों को देखा।ये सभी स्थान कश्मीर के सबसे दर्शनीय (अवश्य देखने योग्य) स्थानों में से हैं। अरु घाटी का जो दृश्य हमने 360 डिग्री के कोण से देखा वह प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत चमत्कार था जिसे अनुभव करना बिल्कुल असंभव है मेरे जैसे नवयुवक को वर्णन करने के लिए। इस स्थान पर "कश्मीर की कली", बजरंगी भाईजान, कर्मा आदि फिल्मों की शूटिंग की गई थी। बेताब घाटी भी अरु घाटी का एक दर्शनीय स्थान है, जहां फिल्म बेताब के "जब हम जहां होंगे जाने कहां होंगे" की शूटिंग की गई थी सनी देवल और अमृता सिंह के साथ तैयार गाना आंखों के सामने आ

गया। विशेष रूप से उस फिल्म में घर की झोपड़ी को अभी भी बरकरार देखकर मुझे अपने व्यस्त कॉलेज के दिनों की याद आ गई, विशेष रूप से, मैंने घने पेड़ों से घिरे स्थानों को देखा, जिनके नाम कश्मीर में फिल्मों के नाम पर रखे गए थे, मुझे अपने पसंदीदा गायक किशोर कुमार की आवाज याद आ गई। "तेरे बिना जिंदगी से कोई शुक्कू नहीं" फिल्म "आंधी" का यह अविस्मरणीय गाना सुचित्रा सेन और स्वर्गीय संजीव कुमार पर फिल्माया गया था। बाद में चंदनवाड़ी में हमें फिर से बर्फ को छूने का मौका मिला। रास्ते में बेताब वैली के पास से गुजरते हुए हमने एक जगह देखी जगह जहां भारतीय सेना की गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त होकर घाटी में गिरी थी और कई जवानों को शहीद होना पड़ा था। रास्ते में पहाड़ी पर शंकराचार्य का प्रसिद्ध मंदिर था, लेकिन हमने भारी थकान के कारण नीचे से ही दर्शन किये। सफर के दौरान मेरी ड्राइवर समीर भाई से बात होती रहती थी। मैं उनके साथ कई विषयों पर चर्चा करता था, मूलतः मेरी रुचि कश्मीर के अध्ययन में थी और मैंने समीर भाई से कश्मीर के इतिहास, भूगोल, संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं के बारे में गहन चर्चा की। विशेषकर आतंकवाद के मुद्दे पर मेरी उनसे खुले मन से चर्चा हुई। बातों-बातों में उन्होंने मेरे कई प्रश्नों के सीधे-सीधे जवाब 'नहीं' दिया। मैंने यात्रा के दरमियान अनुभव किया कि कश्मीरी लोग बहुत विनम्र और ईमानदार होते हैंवह पर्यटकों कादिल नहीं दुखातेअधिक से अधिकबेहतर सेवा देने मेंतत्पर रहते हैं पोशाक।

पहलगाम से मिनी स्वीटजरलैंड यहां से करीब है, घुड़सवारी का अनुभव यहां भी ले सकते हैं। 1000 से लेकर 2400 तक एक व्यक्ति एक घोड़ा लेकर आप वहां पहुंच सकते हैं।यहां से अमरनाथ यात्रा के लिए भी आप निकल सकते हैं। करीब 25 किलोमीटर पैदल और घुड़सवारी के आधार पर आप जा सकते हैं। फिल्म 'बजरंगी भाईजान' का अधिकतर चित्रिकरण इसी क्षेत्र में हुआ है। मिलिट्री का सख्त और कड़ा पहरा यहां लगा रहता है लेकिन हम लोगों के लिए ही वे खड़े हैं, बाकी कोई दिक्कत या परेशानी नहीं होती। पहला दिन हमारा यहां समाप्त हुआ। कश्मीर में कहीं भी आप जाए आपको खाने में मिक्स वेज, पनीर सब्जी, और दाल चावल ही मिलेंगे। दो रोटी बहुत ही छोटा आकार वाली। नॉनवेज में आपको अधिकतर चिकन ही मिलेगा। चाय के साथ ब्रेड और नाश्ते में उबला हुआ अंडा या आमलेट ब्रेड या पोहा का ॉमन रहता है। चूँकि हमें होटल में कश्मीरी व्यंजनों के

नाम नहीं पता थे इसलिए हमने इशारा करके खाना खरीदा और उसका स्वाद चखा। जब हम वहां थे तो शाम के 7:30 बज रहे थे, लेकिन 8:00 बजे सब कुछ साफ और स्पष्ट दिखाई दे रहा था सूरज बहुत देर बाद डूबता है यह भी अनुभव किया।

पहलगाम के लीडर नदी किनारे रंग-बिरंगे फूलों से लड़े बगीचे में हमने कश्मीरी पोशाक पहनकर तस्वीरें खिंचवाई। कुछ पलों के लिए हम कश्मीरी और फिल्मी हीरो हीरोइन जैसे ही लग रहे थे जगह-जगह पर लोग तस्वीर खींचने में व्यस्त दिखते थे कश्मीरी पोशाक किराए पर देना और फोटो खिंचवा कर देना और फिल्मी गीतों के आधार पर रिल बनाकर देना भी यहां के लोगों का एक व्यवसाय है।

पहलगाम में ही हमने चाय नाश्ते के बाद हम कुछ ही दूरी पर स्थित मार्केट चले गए। वहां स्वेटर, जैकेट, मफलर, लेडिज के लिए पांचों, ट्रैवलर बैग खरीदे। यहां आपको मोलभाव करके ही सारा सामान खरीदना पड़ेगा। ढाई हजार, 2000 का स्वेटर हमने 700 -1000 में, 1500-1800 का स्वेटर 300-500 में भी मिलता है। कुछ लोग यहां से ही मिनी स्विट्ज़रलैंड देखने के लिए चले गए वहां घुड़सवारी से ही जाना पड़ता है। जगह-जगह आपको अखरोट 1 किलो 400, 500 के भाव में बेचनेवाले युवा लड़के मिलते हैं लेकिन यहां भी आपको परखकर ही खरीदना पड़ेगा। पुराना माल भी यहां मिक्स करके बेचा जाता है। दोपहर खाना खाने के बाद खरीद किया सामान होटल पर छोड़ दिया। पहलगाम में एक शिवजी का भी मंदिर है जो काफी पुराना माना जाता है। जहां हम शबाना पैलेस में रुके थे, बराबर उसके करीब ही वह मंदिर था। वहां से एक झरना भी बहता है। देर रात खाना खाया और सुबह 9:00 बजे फिर श्रीनगर की ओर प्रस्थान किया।

हमारे यात्रा प्रबंधक ने पहलगाम में ठहरने की अवधि बढ़ा दी। महिलाओं ने इसका भरपूर फायदा उठाया, खरीदारी के लिए बाजार जाते समय महिलाएं खाली बैग और भरे पर्स लेकर धावा बोल देती थीं। भारी खरीदारी की गई। शॉपिंग करते समय मुझे पता ही नहीं चला कि मेरे पैर इतने दर्द कर रहे हैं इस सबका नतीजा यह हुआ कि रास्ते में हमारे सामान में एक बैग और जुड़ गया। कुछ लोगों ने ठंड से राहत पाने के लिए आवश्यक उत्तेजक और गर्म पेय खरीदे। होटल में रात्रिभोज के बाद, दोपहर में हमने घोड़े पर सवार होकर "मिनी स्विट्जरलैंड" का दौरा किया। यह बहुत ही अविस्मरणीय अनुभव था। मेरे घोड़े का नाम 'बादल' था और मैंने उस घोड़े को

बिना किसी की मदद के चलाया। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं किसी पुरानी फिल्म का हीरो हूं। मिनी स्विट्ज़रलैंड अपने नाम के अनुरूप ही पहाड़ की चोटी पर स्थित एक खूबसूरत जगह है।

पहलगाम अमरनाथ यात्रा का प्रारंभिक बिंदु या पगतल है। पहलगाम से अमरनाथ तक पहाड़ी घाटियों से होकर 32 किमी लंबी और मुश्किलों से भरी यात्रा है। घोड़े पर जाने में दो दिन और पैदल चलने में तीन दिन लगते हैं। वास्तव में, पहलगाम को स्वर्ग का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। शायद महाभारत के पांडवों ने अपने जीवन की अंतिम यात्रा करने के लिए स्वर्ग (हिमालय) की यात्रा इसी स्थान से शुरू की थी। इस तरह हम दो दिन तक पहलगाम की जन्नत में रहे।

यहां हम पहलगाम से वापस फिर श्रीनगर, आए। रास्ते में जगह-जगह अकरोड के साथ ड्राय फ्रुट के दुकानों को भी देखा। कश्मीर की शाॅल भी प्रसिद्ध है। कावा- मसालेदार चाय, सुगंधित चाय का अनुभव लेते हम श्रीनगर पहुंचे। यहां ट्युलिप गार्डन बहुत प्रसिद्ध है लेकिन अप्रैल महीने में ही वह खुली रहती है। यहां राज्यपाल का निवास स्थान है इसी कारण वहां जाने के लिए मना है। कश्मीर में अनेक प्रसिद्ध बागीचे अर्थात गार्डन है। इनमें से एक है मुगलकालीन "चेसमाशाही (शाही झरना)", या शाहजहां गार्डन भी कहा जाता है। कश्मीर के गवर्नर का निवास स्थान की ओर यहां से रास्ता जाता है। कारण आपको लोकल रिक्शा या कार गाड़ी से सवारी करनी पड़ती है। 50 तक हर व्यक्ति के लिए चार्ज लगाते हैं। बहुत ही सुंदर गार्डन है। रंग-बिरंगे फूल और प्राकृतिक झरना और झरने का जल स्वादिष्ट है।उसके बाद श्रीनगर में ही कुछ ही दूरी पर स्थित बोटैनिकल गार्डन पहुंचे। सचमुच दुनिया के अलग-अलग पेड़ पौधे और प्राकृतिक नजारा देखने लायक ही था।

करीब करीब 34 किलोमीटर दूरी तक पहले दल लेक/ प्रसिद्ध दल सरोवर के किनारे किनारे से चक्कर लगाते दुनिया का प्रसिद्ध 'हजरतबल दरगाह', भी हमने देखा। यहां हिंदू लोग भी शांति से प्रार्थना कर सकते हैं। यहां मोहम्मद पैगंबर साहब का एक दाढ़ी का बाल रखा हुआ है, जिस से लाखों लोगों की आस्थाएँ जुड़ी हुई हैं। कश्मीरी भाषा में 'बल' का अर्थ 'जगह' होता है, और हज़रतबल का अर्थ है 'हज़रत (मुहम्मद) की जगह'। हज़रतबल दल झील/ दल सरोवर की बाई ओर स्थित है और इसे कश्मीर का सबसे पवित्र मुस्लिम तीर्थ माना जाता है।

सब कुछ देखते-देखते शाम के 5:00 बज गए थे और दल सरोवर के किनारे हम पहुंच गए। यहां हम शिकारा पहुंचे। एक शिकारे में दो या तीन अधिकतर चार आलीशान कमरे बने रहते हैं। दल सरोवर के किनारे हजारों शिकारों में लोग रहते हैं। पानी के भीतर रहना एक अलग अनुभव महसूस करते हैं। आपको सारी सुविधाएं यहां मिल जाती हैं। यहां तक की कश्मीर की सारी चीजें बेचने के लिए लोग अपने-अपने शिकारों को लेकर आपके शिकारे के पास आते हैं। ठंडी हवा के साथ आकाश में चांद चम रहा था और रात का मनमोहक दृश्य मन को अधिक सुकून देता था। 'दल' झील में शिकारा राइड करना और पानी में हाउस बोट पर रात बिताना। एक ऊँचे पहाड़ पर एक "शहीद स्थल" था। शाम को हमने 'हाउसबोट', की सवारी की और पानी में हाउस बोट पर रहने चले गये।" हाउस बोट" का अर्थ है पानी में तैरता हुआ घर। यह घर लकड़ी की नक्काशी का एक अनूठा उदाहरण था। रसोईघर, स्नानघर, शयन कक्ष, भोजन कक्ष आपके घर की तरह ही विशाल हैं। आपकी सेवा में एक नौकर भी है। डल झील में हाउसबोटों का एक गाँव स्थित है। किराने का सामान, स्टेशनरी, सब्जियाँ शिका से खरीदी जाती हैं। वहाँ रहने के बाद मुझे लगा कि हर व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक बार इस हाउस बोट का अनुभव करना चाहिए। डल झील में लिली और कमल के फूल झील की सुंदरता में चार चांद लगा रहे थे। मैंने इस हाउसबोट पर मछली पकड़ने की कोशिश की, लेकिन सौभाग्य से और मेरे लिए दुर्भाग्य से, एक भी मछली नहीं पकड़ी गई, रात में हाउसबोट के मालिक के साथ बातचीत करते समय 'डल झील' में फव्वारे देखने लायक थे हाउसबोट की कीमत तीन करोड़ रुपये तक है। कश्मीर में लोग चीनी वाली चाय नहीं पीते। सुबह-सुबह अरबी अजान से अपने आप जाग उठते हैं। जब मैं बाहर आया तो मैंने 'डल झील' का मनोरम दृश्य देखा, तभी मैंने "हरे राम हरे कृष्णा" की धुन सुनी और मुझे आश्चर्य हुआ और एहसास हुआ कि हम भारत में हैं।

एक रात 'दल लेक' शिकारा में बीतने के बाद चाय नाश्ता के पश्चात हम अपना सारा लगेज इकट्ठा कर और वापस आने की तैयारी में जुट गए। आखरी बार शिकारा में बैठे करीब 01 घंटे तक हमनें शिकारा राइड किया। बहुत ही सुंदर नजारा था। चारों ओर पहाड़, पहाड़ों पर दिखती बरफ, करीब 34 किलोमीटर लंबा दूर पर फैला, दल सरोवर, सरोवर के किनारे किनारे बसे हाउसबोट और बीच-बीच से सफर

करने वाले यात्रियों का दृश्य मोहक था। हमने भी अनुभव किया, एक बेहतरीन अनुभव रहा। आपके शिकारे के पास अन्य कुछ शिकारों को लेकर कुछ कश्मीरी लोग अपनी चीजों को बेचने के लिए, छोटे-छोटे व्यापारी आपके शिकारे के पास आते हैं। अलग-अलग फ्रूट,नक्शीदार लकड़ी की चीजें, शो पीस, अखरोट, मिठाई, महिलाओं की बनावटी गहने, शाल, स्वेटर, जैकेट बहुत कुछ।

अंत में, हमने श्रीनगर में "हज़रत बल" के पवित्र स्थान का दौरा किया, यह एक भव्य मस्जिद थी, जो मुगल वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण थी। अत्यंत शांत वातावरण और पास की झील की ठंडी हवा ने मन प्रसन्न कर दिया। वहां मुस्लिम धर्म के संस्थापक पैगंबर मुहम्मद की दाढ़ी का एक बाल रखा हुआ है। उस स्थान पर बैठकर कुछ देर सोचा और सोचा कि यह तीर्थ तैंतीस करोड़ देवताओं में से एक होगा, तभी मेरी नजर एक शोकेस में रखी एक बड़ी किताब पर गयी। वह किताब अरबी कुरान की नकल थी। यह औरंगज़ेब की लिखावट में कुरान था। जब मैंने इसे बहुत सुंदर लिखावट देखी तो मुझे विश्वास नहीं हुआ! मैंने सोचा कि इंसान चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, हर इंसान में कुछ न कुछ अच्छाई जरूर होती है। अंत में, हमने श्रीनगर के सभी निवासियों से विदाई ली। हमने उन सभी सेवकों को पुरस्कृत किया जिन्होंने हमारी बहादुरी से सेवा की और हम हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गए। यह दिल्ली से जम्मू होते हुए था। दिल्ली पहुंचने के बाद अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर आंखें नम थीं। दिल्ली हवाई अड्डे पर चाय पीने का मन था लेकिन एक कप चाय की कीमत 360 रुपये सुनकर चाय की चाहत खत्म हो गई। हम रात को दिल्ली से मुंबई सुरक्षित पहुंच गए लेकिन हमारे कुछ साथियों के बैग वहीं छूट गए और अगले दिन वो सब आए कूरियर द्वारा। बैग घर पर सुरक्षित पहुंचाए गए। हम मुंबई से वैभव ट्रैवल के स्लीपर कोच से पहुंचे। मुझे रात को नींद नहीं आ रही थी, कश्मीर की प्रकृति मेरी आँखों से ओझल नहीं हो रही थी। क्या पहाड़ है!!! क्या घाटी है!!! वह बर्फ क्या है!!! क्या झाड़ी है!!! सब कुछ कैसे है झक्कास...?

सचमुच यादगार रही दोबारा कश्मीर यात्रा। एक नए अंदाज और एक नए अनुभव के साथ। सातवें और आखिरी दिन हमने पूरा श्रीनगर देखने का फैसला किया। इसमें कश्मीर के सभी मुगल गार्डन देखे गए, जिनमें मुगल गार्डन, चश्मे शाही गार्डन, इंदिरा गांधी बॉटनिकल गार्डन, ट्यूलिप गार्डन आदि शामिल हैं। प्रत्येक

उद्यान में प्रवेश शुल्क है। कश्मीरी उद्यान ईस्टमैन कलर के फूलों से भरे हुए थे और कोई भी गुलाब के पेड़ों को बैठकर देखना चाहता था क्योंकि एक गुलाब के पेड़ में कम से कम 70/80 पूर्ण खिले तांबे के फूल और इतनी ही संख्या में कलियाँ होती थीं। इसलिए मुझे अपने बगीचे में गुलाबों को लेकर बहुत दुख हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति ने अपने मुक्त हाथों से रंग बिखेरे हों, सचमुच कश्मीरी बगीचे धरती पर स्वर्ग हैं। उस सफ़ेद मिट्टी का गुण क्या है!!! मैंने ऐसा सोचा था; बॉटनिकल गार्डन में जाने के बाद, मैंने फिल्म "सिलसिला" के रोमांटिक गाने "देखा एक ख्वाब तो सिलसिले हुए" के सामने डांस करना शुरू कर दिया, जिसमें सुपरस्टार अमिताभ बच्चन और रेखा थे, लेकिन दुर्भाग्य से हम ट्यूलिप का आनंद नहीं ले पाए ट्यूलिप का कोई मौसम नहीं। संक्षेप में, रेखा के साथ अमिताभ बच्चन का सपना और ट्यूलिप गार्डन का हमारा सपना टूट गया। !लेकिन हमारे दिल वहां कई अनजाने फूलों से भर गए। शहर में मुगल उद्यानों की सुंदरता देखकर सचमुच थक गया हूँ! दरअसल, अच्छे बगीचे देखने की आदत डालनी होगी।

आखिरकार हमने श्रीनगर को बाय-बाय कर हवाई अड्डे पर पहुंचे। 08 साल पहले हम श्रीनगर गए थे और इस साल भी गए तो एक फर्क निश्चित रूप से दिखाई दिया कि अब कश्मीर पूरी तरह से खुला हुआ है काफी भीड़ भरे रास्ते, यातायात के साधनों की भरमार हमने देखी। हमारा कुल 25 लोगों का ग्रुप था। चार विमानों में से अलग-अलग समय पर हमें मुंबई पहुंचना था। श्रीनगर में भी देखा की हवाई अड्डे पर पानी की बोतल 100, सैंडविच 350 रुपए, चाय सौ रुपए पर मिलती है। अपने परिवार जनों के लिए स्वेटर, पांचों, जैकेट आदि खरीदने के कारण हर एक के पास चार-चार बॅग हुए थे। ध्यान रहें हवाई जहाज में सिर्फ एक व्यक्ति के लिए 15 किलो का लगेज और हैंडबैग में अधिकतर 05-07 किलो तक ही समान आप ले सकते हैं। उसके आगे आपको एक्स्ट्रा एक किलो से लेकर 5 किलो तक के लगेज के लिए 3000 रुपए देने पड़ते हैं। हवाई जहाज का अनुभव बेहतर रहा। श्रीनगर से मुंबई सीधा प्रवास 3 घंटों से अधिक रहता है। चेकिंग के लिए दो, ढाई तीन घंटे चले जाते हैं। लगेज में आप अलग-अलग प्रकार के सामान रख सकते हैं लेकिन ज्वलनशील,हथियार, ब्लेड, चाकू, छुरी आदि नहीं रख सकते। हैंडबैग में हमने कश्मीरी तीखा मसाला(कश्मीरी लाल चटनी) लिया था। अंजानवश ध्यान में

नहीं आया। हवाई अड्डे पर पुलिसवालों ने उसे मेटल डिटेक्टर द्वारा चेक करने के बाद निकाल कर फेंक दिया। ध्यान रहे की हैंडबैग में तीखा और नुकीला, हथियार या बॉडी स्प्रे जैसी चीज़ ले जाने के लिए मना है। हवाई यात्रा का अनुभव भी एक अलग रहता है। हवाई जहाज बहुत ऊंचाई पर पहुंचता है तब सिर्फ खिड़की से झांकने के बाद सफेद नीला, बर्फीला समूह आकाश दिखता है है। मुंबई पहुंचने के बाद फिर हवाई अड्डा से निकलकर प्राइवेट टैक्सी से ट्रैवल स्थान पर पहुंचे और स्लीपर कोच लग्जरी गाड़ी से वाठार कोल्हापुर और वारणानगर सुबह 9:00 बजे घर वापस पहुंचे।

इस यात्रा वर्णन को पढ़ने के बाद हर किसी को कश्मीर घूमने की इच्छा जरूर होगी तो दोस्तों आपको बिना झिझक कश्मीर जाना चाहिए। जिंदगी को जन्नत बनाओ जैसे जिंदगी मुंबई। हर किसी को ये महसूस होना चाहिए कि सिर्फ कश्मीर मेरा है। भारत के लिए कश्मीर उतना ही महत्वपूर्ण है जितना मोर के सिर पर कलगी। मैं यात्रा संयोजक, मेरे सभी सहयोगियों और मेरी भाग्यशाली साथी और परिवार जनों को भी धन्यवाद देता हूं क्योंकि केवल उनके कारण ही मैं वास्तव में अपने सपनों के कारण ही कश्मीरायन कर सका।

संक्षेप मे कश्मीर यात्रा एक बार हर व्यक्ति को करनी चाहिए। कश्मीर के लोग प्रचंड मेहनती, पुरुष ही अधिकतर रास्तों पर मेहनत करते हैं। घर परिवार में महिलाएं। रास्तों पर या उद्योग व्यवसाय करने वाली एक भी महिला बाहर दुकान या रास्तों पर दिखती नहीं। छोटे-छोटे बच्चे स्कूल जाते नजर आए उसमें बच्चियां भी थी। कश्मीर अब खुला होने के कारण काफी भीड़ लोगों की और यातायात साधनों की रास्तों पर दिखती है। कश्मीर में भी अब अलग-अलग जगह टनल, रास्ते बनाए जा रहें हैं। अधिकतर कश्मीरी लोग गोरे चिट्टे, नुकीली सरल नाक वाले, ऊंचा कद, सपाट पेट वाले। अधिकतर लोग इमानदार। लेकिन हर चीज खरीद के लिए आपको उनके साथ बारगेनिंग करना पड़ेगा। खाने में अधिकतर सादा खाना खाते हैं। व्हेज खानें में दाल रोटी, मिक्स सब्जी, फ्रूट, जूस, पनीर सब्जी आदि। नॉनवेज में अधिकतर 80% लोग चिकन ही खाना पसंद करते हैं। मांग करने के बाद आपको कश्मीरी बकरी का मांस भी मिलता है। अंडामलेट,पोहा, वेज, नॉन वेज एक साथ खाते हैं। खाने में मसाला, तेल, तिखा, नमक ना के बराबर रहता है। इसी कारण

महाराष्ट्रीयन लोगों को यह खाना एक-दो दिन के बाद खाने के लिए कठिन लगता है। कश्मीर में आप कहीं भी पानी पिए आपको साफ सुथरा ही मिलेगा। बिसलेरी, फिल्टर वॉटर की जरूरत ही नहीं पड़ती। इसी कारण हम दोबारा यात्रा सफल कर पाएं। सच है कश्मीर हर इंसान के लिए स्वर्ग तो है हीं जन्नत से भी कम नहीं है।

संपर्क:
हिंदी विभाग अध्यक्ष एवं शोध- निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, संलग्न,
वारणा विश्वविद्यालय, अंतर्गत
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर-416113, जिला- कोल्हापुर, (महाराष्ट्र)
ई - मेल - drprakashchikurdekar@gmail.com